

भाषा । साहित्य । संस्कृति



# कृष्ण

कौन है ये गुल मकई ?  
डरती नहीं जो बंदूकों से  
डटी रहती बेखौफ  
उनकी धमकियों के सामने

ढहा दिए सैकड़ों मदरसे जिन्होंने  
उजाड़ दी स्वात घाटी  
तबाह कर दी बेपनाह खूबसूरती और शांति...

~ हेमंत देवलेकर

संपादक : आलोक रंजन

वर्ष:02, अंक:19, अक्टूबर 2025



आवरण- बंशीलाल परमार

भाषा । साहित्य । संस्कृति

# प्रश्नचिह्न

अक्टूबर 2025 । उन्नीसवाँ अंक

प्रबंध सम्पादक:

राहुल राज

प्रबंध सहयोग:

सौरव कुमार भारती

आवरण: बंशीलाल परमार

रेखांकन: श्वेता कुमारी

सम्पादक

आलोक रंजन

अक्षर संयोजन

खुशी

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

## **वार्षिक मूल्य :**

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	\$25

## **एक प्रति का मूल्य :**

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	\$10

## **विज्ञापन दरें :**

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

## **संपादकीय कार्यालय:**

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,  
विजय नगर, दिल्ली - 110009  
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com  
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाइट: <https://prashanchinhapatrika.blogspot.com>

फेसबुक: <https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika>

इंस्टाग्राम: <https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika>

### सम्पादकीय

### कविताएँ

हेमंत देवलेकर, रमेश श्रीवास्तव, विजय शंकर पांडेय  
बबीता कुमावत, सुरेंद्र पाल सोनी

### कहानियाँ

भोला नाथ सिंह  
सीमा सक्सेना

### गज़ल

अशरफ अली  
सिद्धेश्वर

### लघुकथा

डॉ. अलका अग्रवाल  
भारत दोसी

### विविध

साहित्यिक समाचार

मुझे आज भी याद है जब मैं कॉलेज के अंतिम वर्ष में अंग्रेजी पढ़ रहा था, तब हमारी अध्यापिका 'पितृसत्ता' का पाठ पढ़ा रही थीं। पढ़ाते समय उनके हाथ काँप रहे थे... एक पढ़ी-लिखी औरत, जिसके कमाई से उसका घर चलता होगा, वह भी समाज को देखती है, समझती है। भारतीय समाज के मूल प्रश्नों में से एक यह है कि रिश्तों में सत्ता किसके हाथ में रहेगी। पुरुष या स्त्री? “पति ही परमेश्वर” जैसी धारणाएँ इसी सत्ता-संतुलन का सांस्कृतिक संस्करण हैं। इनकी जड़ें इतिहास, धर्मकथाओं, पितृसत्ता, लोकाचार और सामाजिक असुरक्षाओं से मिलकर बनी हैं। परंतु जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे यह कथन अधिक सवाल उठाता है।

पत्नी पूजा पाठ करे, पति प्रभुत्व रखे! यह असंतुलन क्यों?

हमारी सांस्कृतिक संरचना में यह विरोधाभास विचित्र है कि धार्मिक अनुष्ठान, व्रत, पूजन सब महिला करे, परंतु प्रतिष्ठा, अधिकार और “परमेश्वरत्व” पुरुष के हिस्से में जाए। यह स्थिति केवल आस्था का प्रश्न नहीं, सामाजिक शक्ति-व्यवस्था का परिणाम है, जिसमें पुरुष को स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ माना गया और स्त्री को कर्तव्य-केंद्रित। जब पति को परमेश्वर कहा गया, तो यह कोई दार्शनिक सत्य नहीं था। यह परिवार के भीतर पुरुष को अधिकार की अंतिम मुहर देने का उपकरण था। और इसीलिए, जब कोई पुरुष अपनी पत्नी की मदद करता है जैसे कपड़े धोता है, खाना बनाता है, उसकी देखभाल में हाथ बँटाता है तो उसी समाज की महिलाएँ, यानी उसकी माँ-बहन भी, उसे “मौगा” जैसे शब्द से नीचा दिखा देती हैं। यह विडंबना नहीं, पितृसत्ता का गहरा संक्रमण है। जहाँ पुरुषत्व की कसौटी सेवा नहीं, प्रभुत्व है।

“मौगा” कहे जाने का सही अर्थ क्या है। भोजपुरी संस्कृति में “मौगा” का उपयोग अक्सर उस पुरुष के लिए होता है जो स्त्रैण समझा जाए। यानी जो कठोर, अक्खड़, प्रभुत्वशाली पुरुषत्व की परिभाषाओं पर खरा न उतरे। लेकिन यह शब्द सिर्फ व्यंग्य नहीं। यह समाज की उस मानसिकता का प्रमाण है जिसमें। सेवा को स्त्री का धर्म और प्रभुत्व को पुरुष का चरित्र माना गया है।

प्रेमिका का सैंडल उठाने से लेकर पत्नी की थाली में बचा भोजन खाने तक समाज किसी भी ऐसे व्यवहार पर निगरानी रखता है जो पुरुष को बराबरी के स्तर पर ला दे। क्योंकि बराबरी पितृसत्ता के लिए खतरा है।

अगर हम इसे धर्म-दर्शन का विरोधाभास समझे तो हिन्दी साहित्य का इतिहास के भक्तिकाल का दृष्टिकोण से देखते हैं कि सूफी काव्यधारा में आत्मा को पुरुष और परमात्मा को स्त्री चिह्नित किया गया। यह प्रतीक था समर्पण, सौंदर्य और संवेदनशीलता का। परंतु जैसे ही हम रीति काल में पहुँचते हैं, स्त्री वही “भोग-विलास की वस्तु” बन जाती है। क्यों? क्योंकि धार्मिक उपमान और सामाजिक व्यवहार दोनों अलग शक्तियों से संचालित होते हैं। भक्ति में स्त्रीत्व आत्मिक गुण है- नम्रता, प्रेम, समर्पण। समाज में स्त्रीत्व सत्ता-विहीनता का पर्याय बना दिया गया। इसलिए “मान लेने से” कुछ नहीं होता। भक्ति का स्त्रीत्व स्त्री को ऊँचा उठाता है, पर सामाजिक पुरुष सत्ता उसी स्त्री को नीचे दबा देती है।

प्रश्नों के दृष्टिकोण से समझे तो एक नया प्रश्न आ जाएगा कि परमेश्वरत्व किसे चाहिए? क्या पति को सचमुच “परमेश्वर” बनकर जीने की जरूरत है? क्या पत्नी को केवल “कर्तव्यनिष्ठा” का प्रतीक बने रहना चाहिए? या रिश्ते आदर्श तब बनेंगे जब सेवा दोनों करें, सम्मान दोनों दें, और बराबरी दोनों चाहें? समय आ चुका है कि हम इस मिथक को चुनौती दें।

परमेश्वरत्व एक इंसान को देने से दूसरा कम नहीं हो जाता। पर बराबरी का भाव अपनाने से दोनों बड़े हो जाते हैं।

अंतिम बात जो हमें कहना है कि अपनी बहन बेटी को विदा करते समय बेटी को किसी का दास मत बनाइए और उसके सामने प्रचलित कहावत पति परमेश्वर होता है ना बोले तो सभी के लिए बेहतर होगा।

समाज का हर शब्द- चाहे “पति-परमेश्वर” हो या “मौगा” सिर्फ भाषा नहीं है। वह हमारी सोच का आईना है। हमें तय करना है कि हम किस तरह के समाज का आईना बनना चाहते हैं। वह जिसमें प्रेम करने वाला पुरुष कमजोर कहलाए, या वह जिसमें प्रेम करना, सेवा करना, सहायता करना मानवता मानी जाए? सवाल अब यह नहीं कि पति परमेश्वर क्यों माना गया। सवाल यह है कि आज भी क्यों माना जा रहा है?

यह संपादकीय इसी प्रश्न को आपके सामने छोड़ता है-  
ताकि हम मिलकर वह समाज बना सकें जहाँ समानता देवत्व से भी ऊँची हो।

आपका-

**आलोक रंजन**

alokranjanoffice@gmail.com



(मलाला यूसुफज़ई के लिए)  
गुल मकई... गुल मकई... गुल मकई...

कौन है ये गुल मकई ?  
डरती नहीं जो बंदूकों से  
डटी रहती बेखौफ  
उनकी धमकियों के सामने

ढहा दिए सैकड़ों मदरसे जिन्होंने  
उजाड़ दी स्वात घाटी  
तबाह कर दी बेपनाह खूबसूरती और शांति

निकाले फतवे  
कि लड़कियों का पढ़ना हराम है  
हराम है उनका सांस लेना खुली हवा में

कदम कदम पर बारूद की तरह बिछा  
खौफ शरीयत कानून का

कौन है ये गुल मकई ?  
जो पूरी घाटी में दौड़ती  
इंकलाबी आंधी की तरह  
जो लड़कियों के लिए इल्म की  
तालीम की बात करती  
जो लड़कियों के हक के लिए लड़ती

कौन है , कौन है ये गुल मकई ?  
हर कोई हैरान है  
सांप सूँघ गया हो  
इस कदर तालिबान है।



**हेमंत देवलेकर**

सम्पर्क : भोपाल

ईमेल : hemantdeolekar11@gmail.com

